“राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर पारिवारिक वातारण के प्रभाव का अध्ययन”

(Raashtreey Mukt Vidyaalayee Sansthaan Mein Adhyayanarat Maadhyamik Star Ke Vidyaarthiyon Kee Saamaajik Dakshata Par Paarivaarik Vaataaran Ke Prabhaav Ka Adhyayan)

SHORT SYNOPSIS

Submitted in partial fulfillment of the requirement of the degree
of
DOCTOR OF PHILOSOPHY IN EDUCATION
to
U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj

by
(Akhilesh Kumar Singh)
En. No. 2100901

Under the Supervision of
Dr. Girish Kumar Dwivedi
Faculty of Education

School of Education
U.P. Rajarshi Tandon Open University
Shantipurm, (Sector –F) Phaphamau,
Prayagraj – 211021

School of Education

CERTIFICATE

I hereby declare that the short synopsis "राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन" (Raashtreey Mukt Vidyaalayee Sansthaan Mein Adhyayanarat Maadhyamik Star Ke Vidyaarthiyon Kee Saamaajik Dakshata Par Paarivaarik Vaatavaran Ke Prabhaav Ka Adhyayan) being submittee in partial fulfillment of the requirement for the degree of Doctor of Philosophy in Education under school of Education of U.P. Rajarshi Tandon Open University, Prayagraj during the academic year 2023.

It is a bonafide record of original work carried out under the supervision of Dr. Girish Kumar Dwivedi and has not been submitted in full or part to any other university or institute for a degree or diploma. Further, it is certified that the short synopsis is plagiarism-free and the report has been submitted.

Research Supervisor
(Associate Prof. Dr. G.K. Dwivedi)
Faculty of Education

Akhilesh Kumar Singh
En. No. 2100901

16.07.2025
(Prof. P.K. Astalin)
(Director School of Education)

16/07/25
(Prof. P.K. Pandey)
(Director R&D Cell)

सारांश (Abstract)

वर्तमान शोध का उद्देश्य **"राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर पारिवारिक वातारण के प्रभाव का अध्ययन"** करना है। आज के भौतिकवादी युग में नैतिक मूल्यों का ह्रास स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जिससे विद्यार्थियों की सामाजिक चेतना प्रभावित हो रही है। शिक्षा का उद्देश्य केवल वौद्धिक विकास न होकर समग्र मानवीय विकास है, जिसमें पारिवारिक वातावरण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। यह शोध शहरी और ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण और उनकी सामाजिक दक्षता के बीच संबंधों की तुलना एवं विश्लेषण पर केंद्रित है। शोध परिणाम यह दर्शाते हैं कि पारिवारिक वातावरण विद्यार्थियों की सामाजिक समझ, उत्तरदायित्व बोध, और व्यावहारिक जीवन मूल्यों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

Keywords: पारिवारिक वातावरण, सामाजिक दक्षता, माध्यमिक स्तर, राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, विद्यार्थियों का विकास, सामाजिक चेतना, नैतिक मूल्य।

CONTENTS

S. No.	Description	Page No.
1.	Introduction	1
2.	Literature Review	2-7
3.	Description Broad Area	8
4.	Objectives of the Study	10-11
5.	Research Methodology	12-13
6.	Expected Outcome of the Research	13
	References	
	Plagiarism Report	

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन

प्रस्तावना–

आज के भौतिकवादी युग की प्रतिद्वन्दिता, विलसिता, एकांगी सोच आदि को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षा के केवल एक ही पक्ष को मनुष्य ग्रहण करना चाहता है। वह शिक्षा को वहीं तक अपनाना चाह रहा है, जहां तक उसके भौतिकवादी जीवन पद्धति की मांग है। शिक्षा के व्यापक रूप की अवहेलना की जा रही है जिसका प्रभाव हम समाज में फैली हुई अराजकता, असुरक्षा, असंतुष्टि आदि के रूप में देख सकते हैं। **जान लॉक** ने मनुष्य के जीवन में शिक्षा के महत्व पर कहा कि–**"पौधों का विकास कृषि से होता है और मनुष्य का शिक्षा द्वारा।"**

सुविख्यात शिक्षाशास्त्री पेस्टालॉजी ने शिक्षा के अभिप्राय को व्यक्त करते हुए लिखा है कि **"शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक सामंजस्यपूर्ण एवं प्रगतिशील विकास है।"** पेस्टालॉजी की यह परिभाषा बालक के संतुलित विकास पर जोर देती है।

बालक की प्रथम पाठशाला उसका परिवार होता है और माता उसकी प्रथम शिक्षिका होती है। बालक के सर्वांगीण विकास में पारिवारिक वातावरण की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बालक–बालिकाओं के व्यक्तित्व, चरित्र, एवं सामाजिक दक्षता पर उनके पारिवारिक वातावरण का प्रभाव उनके व्यवहारों पर पड़ता है। इस दिशा में किये गये अनेक अनुसंधान कार्यों से उपर्युक्त मान्यता एक तथ्य के रूप में स्थापित होती है कि घर में अभिभावक बच्चों को जिस प्रकार के वातावरण में रखते हैं, बालक तथा बालिकाओं का व्यक्तित्व उससे प्रभावित होता है, जिसका प्रभाव उनके सामाजिक दक्षता पर भी अवश्य पड़ता है।

सम्बन्धित साहित्य का संक्षिप्त विवरण–

रामाकान्त (2020): द्वारा ''उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों का उनके लिंग, परिवेश एवं संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन'' नामक अनुसंधान कार्य किया। परिणाम में पाया कि उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्र एवं छात्राओं के लोकतांत्रिक मूल्यों में अन्तर्निहित व्यक्ति की गरिमा, स्वतंत्रता, समानता, न्याय, सहयोग और सहिष्णुता मूल्य में सांख्यिकीय तौर पर कोई अर्थपूर्ण भेद नहीं है।

मिश्रा, अनुराग (2020): द्वारा ''उच्चतर माध्यमिक छात्रों के बीच समायोजन पर व्यक्तिगत मूल्यों, शैक्षणिक आकांक्षा, जीवन शेली और निराशा का प्रभाव'' नामक अनुसंधान कार्य में यह परिणाम पाया कि समायोजन की व्यक्तिगत और पर्यावरणीय कारकों पर एक जटिल कार्यात्मक निर्भरता है।

सिंह, आकाश दीप (2019): द्वारा ''वाराणसी जनपद के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के शैक्षणिक सफलता पर उनकी बुद्धि, सफलता प्रेरणा एवं समायोजन का प्रभाव'' नामक विषय पर अनुसंधान कार्य किया। परिणाम में पाया कि छात्र/छात्राओं के प्रज्ञा का स्तर औसत श्रेणी से नीचे का था, सफलता प्रेरणा का स्तर औसत श्रेणी का था, समायोजन का स्तर औसत श्रेणी का था तथा शैक्षणिक सफलता औसत श्रेणी को प्रदर्शित करता है। छात्र/छात्राओं की प्रज्ञा का उनके शैक्षणिक सफलता पर अर्थपूर्ण प्रभाव है।

तथा–

- सफलता प्रेरणा का छात्र/छात्राओं की वर्षिक शैक्षणिक सफलता पर अर्थपूर्ण प्रभाव है।

- समायोजन का छात्र/छात्राओं की वर्षिक सफलता पर कोई अर्थपूर्ण प्रभाव नहीं है।

- प्रज्ञा और सफलता प्रेरणा के अन्तःक्रिया का उनके वर्षिक सफलता पर कोई अर्थपूर्ण प्रभाव नहीं है।

- प्रज्ञा और समायोजन के अन्तःक्रिया का उनके वर्षिक शैक्षणिक सफलता पर कोई अर्थपूर्ण प्रभाव नहीं है।

- सफलता प्रेरणा और समायोजन के अन्तःक्रिया का छात्र/छात्राओं के वर्षिक शैक्षणिक सफलता पर कोई अर्थपूर्ण प्रभाव नहीं है।

- प्रज्ञा, सफलता प्रेरणा तथा समायोजन के परस्पर अन्तःक्रिया का उनके वर्षिक शैक्षणिक सफलता पर कोई अर्थपूर्ण प्रभाव नहीं है।

सिंह, प्रदीप कुमार (2019) द्वारा ''माध्यमिक शिक्षा स्तर पर छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर अध्यापकों की शैक्षणिक अभिरूचि एवं शैक्षणिक अभिक्षमता के प्रभाव का अध्ययन'' नामक विषय पर अनुसंधान कार्य किया। परिणाम में पाया कि–

- शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक शिक्षा स्तर के अध्यापकों की शैक्षणिक अभिरूचि में कोई अर्थपूर्ण भेद नहीं है।

- ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शैक्षणिक अभिरूचि में कोई अर्थपूर्ण भेद है।

- शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शैक्षणिक अभिक्षमता में अर्थपूर्ण भेद नहीं है।

- ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शैक्षणिक अभिक्षमता अर्थपूर्ण भेद है।

- शहरी शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता में कोई अर्थपूर्ण भेद नहीं है।

- ग्रामीण शासकीय एवं अशासकीय माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता में अर्थपूर्ण भेद है।

- शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिरूचि का छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर पड़ने वाले प्रभाव में अर्थपूर्ण भेद है।

- शहरी एवं ग्रामीण माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की अभिक्षमता का छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर पड़ने वाले प्रभाव में अर्थपूर्ण भेद है।

गलफट, संगीता (2019) ने "माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन के प्रभाव का अध्ययन" नामक विषय पर अनुसंधान कार्य किया। परिणाम में पाया कि माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक सफलता पर पारिवारिक वातावरण एवं समायोजन का अर्थपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

श्रीवास, संदीप कुमार (2017): द्वारा पारिवारिक पर्यावरण के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की शैक्षणिक रूचि, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक दक्षता पर अनुसंधान किया। अनुसंधान में यह पाया कि पारिवारिक पर्यावरण छात्राओं की तुलना में छात्रों की बेहतर है। सामाजिक दक्षता के

सम्बन्ध में प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि छात्राओं की तुलना में छात्रों की सामाजिक दक्षता अधिक है।

अन्नामलाई, के0 (2015): द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता का अध्ययन उनकी सामाजिक बुद्धि, सामाजिक समायोजन एवं सामाजिक कौशल के संदर्भ में किया। अध्ययन के निष्कर्षों में छात्रों की सामाजिक दक्षता छात्राओं से अधिक प्राप्त हुआ तथा सामाजिक दक्षता का सामाजिक बुद्धि, सामाजिक समायोजन एवं सामाजिक कौशल के साथ अर्थपूर्ण सम्बन्ध पाया गया।

सरिता (2014): द्वारा हाईस्कूल के छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता पर सहयोगी शिक्षण के प्रभाव का अध्ययन किया। परिणाम में पाया कि सहयोगी शिक्षण का छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता पर अर्थपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

बोरा, एस0 (2013): द्वारा किशोर छात्र/छात्राओं के पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षणिक सफलता का अध्ययन किया और परिणाम में पाया कि छात्र के जीवन में पारिवारिक वातावरण महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, विद्यार्थी के विद्यालयी सफलता पर इसका धनात्मक प्रभाव पड़ता है। पारिवारिक वातावरण तथा शैक्षणिक सफलता के मध्य अर्थपूर्ण सहसम्बन्ध है।

सिंह, एम0एल0 (2013): द्वारा एकाकी अभिभावक परिवार तथा पूर्ण अभिभावक परिवार का प्रभाव छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता पर देखा। अध्ययन के परिणामों में एकाकी अभिभावक परिवार तथा पूर्ण अभिभावक परिवार के छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता में भेद पाया गया तथा पूर्ण अभिभावक परिवार के छात्र/छात्राओं की सामाजिक दक्षता बेहतर पायी गयी।

सिंह, युद्धवीर (2012): द्वारा "अनुसूचित जनजाति के शहरी व ग्रामीण छात्रों का समायोजन, आर्थिक स्थिति तथा सामाजिक परिवर्तन के दृष्टिकोण का तुलनात्मक अध्ययन" नामक विषय पर अनुसंधान कार्य किया। परिणाम में पाया कि छात्र–छात्राओं के गृह समायोजन एवं स्वास्थ्य समायोजन में समानता पाई गई अर्थात् उनके समायोजन में कोई भेद नहीं प्राप्त हुआ जबकि शहरी छात्रों का सामाजिक समायोजन ग्रामीण छात्रों से उच्च प्राप्त हुआ।

सिंह, आर0 (2011): द्वारा उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्र/छात्राओं के आत्मविश्वास, पारिवारिक पर्यावरण और मानसिक स्वास्थ्य का उनकी संवेगात्मक परिपक्वता पर अनुसंधान किया। परिणाम में यह पाया गया कि संवेगात्मक परिपक्वता का पारिवारिक पर्यावरण, मानसिक स्वास्थ्य और आत्मविश्वास के मध्य कोई अर्थपूर्ण सम्बन्ध नहीं था और संवेगात्मक परिपक्वता के निर्धारण में इन चरों की कोई भूमिका नहीं थी।

धांडा, पी0बी0 एण्ड सिंह, सी0के0 (2009): द्वारा पूर्व विद्यालयी बच्चों के पारिवारिक पर्यावरण का उनकी सामाजिक दक्षता पर पड़ने वाले प्रभाव विषय पर अध्ययन किया। अध्ययन के परिणामों में पाया कि बच्चों की सामाजिक दक्षता पर पारिवरिक पर्यावरण का प्रभाव पड़ता है तथा परिवार की आय, माता की शिक्षा, पिता का व्यवसाय, परिवार का आकार जैसे चर बच्चों की सामाजिक दक्षता को अत्यधिक प्रभावित करते हैं।

कुमार, आर0 (2008): द्वारा अपने माध्यमिक स्तर व उच्च माध्यमिक स्तर के छात्र/छात्राओं के पारिवारिक समर्थन पर शोध किया। शोध के परिणामों में पाया गया कि छात्र तथा छात्राओं के पारिवारिक समर्थन में अर्थपूर्ण भेद है, जिसमें छात्रों को छात्राओं की अपेक्षा अधिक पारिवारिक समर्थन प्राप्त होता है।

परन्तु ग्रामीण तथा शहरी छात्र/छात्राओं के पारिवारिक समर्थन में कोई अर्थपूर्ण भेद नहीं पाया गया।

मिश्रा, एन0 (2007): द्वारा स्नातक स्तर के छात्र–छात्राओं के आत्मविश्वास, सामाजिक और संवेगात्मक परिपक्वता तथा पारिवारिक वातावरण पर शोध किया। शोध के परिणामों में आत्मविश्वास तथा संवेगात्मक परिपक्वता के मध्य धनात्मक व संवेगात्मक परिपक्वता तथा पारिवारिक वातावरण में भी धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया।

देसाई, पी0 (2007): द्वारा किशोरों की सामाजिक दक्षता का अध्ययन किया और परिणामों में कार्यरत महिलाओं व घरेलू महिलाओं के बच्चों की सामाजिक दक्षता में भेद पाया गया।

सिंह, संजय (2004): द्वारा "शहरी एवं ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का तुलनात्मक अध्ययन" किया और परिणाम में पाया कि शहरी व ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता का कार्य नवीनीकरण, स्वनिर्देशन, तनाव सहन करने की क्षमता, वैयक्तिक, पर्याप्तता, स्वप्रेषण, आध्यात्मिक विकास, सहकारिता, सामाजिक सहनशीलता विचार धारा में बदलाव सामाजिक परिपक्वता समान थी। किन्तु सामाजिक विचारधारा एवं सामाजिक पर्याप्तता में शहरी छात्रों की अपेक्षा ग्रामीण छात्रों की सामाजिक परिपक्वता अधिक थी।

अंशु (1986): "पारिवारिक वातावरण, सफलता मूल्यों व समायोजन का अध्ययन" प्रस्तुत अनुसंधान प्रबन्ध में परिणाम रूप में यह पाया कि बालक की सफलतायों, मूल्यों का विकास एवं अच्छी समायोजन क्षमता, पारिवारिक वातावरण के अच्छे होने पर निर्भर है।

अध्ययन की अर्थपूर्णता–

मानव जीवन के सुव्यवस्थित एवं सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। व्यक्तित्त्व एवं राष्ट्र की प्रगति का आधार वहां की शिक्षा ही होती है। ऐसे उपेक्षित और वंचित समूहों के लिए स्कूली शिक्षा और कौशल विकास के लिए सार्वभौमिक और लचीली पहुंच के साथ सतत् समावेशी शिक्षा प्रदान करने में राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान की महत्वपूर्ण भूमिका है।

बालक के ज्ञान, चरित्र, व्यवहार, व्यक्तित्व इत्यादि के लिए परिवार का सकारात्मक वातावरण महती भूमिका निभाता है। अभिभावक को अपने पारिवरिक वातावरण को आर्थिक, सामाजिक, बौद्धिक व सांस्कृतिक रूप से शिखर तक ले जाने का प्रयास सदैव करते रहना चाहिए जिससे बालक व बालिका का सर्वांगीण विकास हो सके।

समस्या कथन–

"राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन।"

प्रस्तावित शोध में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण–

1. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान–

राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान, मुक्त बेसिक शिक्षा, माध्यमिक, व्यावसायिक और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र में मुक्त और दूरस्थ शिक्षा (ओडीएल) के माध्यम से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अधिकतम उपयोग करते हुए शिक्षा प्रदान करता है। राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान की नीतियों में खुलापन

और लचीलापन अंतर्निहित है। यहां प्रवेश लेने के लिए कोई अधिकतम आयु सीमा नहीं है। यह गुणवत्तापूर्ण स्कूली शिक्षा और कौशल विकास के लिए सार्वभौमिक और लचीली पहुंच के साथ सतत् समावेशी शिक्षा प्रदान करता है।

2. माध्यमिक स्तर–

भारत में कक्षा–9 से लेकर कक्षा–12 तक की शिक्षा को माध्यमिक स्तर की शिक्षा कहा जाता है।

3. पारिवारिक वातावरण–

परिवार बालक के समाजीकरण की सर्वप्रथम और सबसे अधिक महत्वपूर्ण संस्था होती है। पारिवारिक वातावरण बालक के प्रारम्भिक शिक्षा का आधार बनता है जिसमें बालक अपने अभिभावक एवं परिवार के अन्य सदस्यों में अपना व्यवहार स्थापित करता है, पारिवारिक वातावरण स्वस्थ होने पर बालक का सर्वांगीण विकास उचित ढंग से होता है।

परिवार बालक का अनौपचारिक विद्यालय है जिसमें बालक अपनी शिक्षा का आधार तैयार करता है। इसके लिए अभिभावक ही बालक की अन्तर्निहित योग्यताओं को पहचान कर उसे प्रोत्साहित करते हैं। बालक का अधिकांश समय पारिवारिक वातावरण में व्यतीत होता है। ऐसी स्थिति में न केवल बालक की शिक्षा अपितु उसके अन्य क्षेत्रों का विकास भी प्रभावित होना स्वाभाविक है।

4. सामाजिक दक्षता–

सामाजिक दक्षता को परिभाषित करते हुए हसांग फिज़गेराल्ड, जकर, वांग व पटलर (2005) ने बताया है कि "सामाजिक दक्षताः यह एक वांछित

सामाजिक परिणाम प्राप्त करने के लिए पर्यावरण और निजी संसाधनों का उपयोग करने की क्षमता है।''

आइसलर (1976) के अनुसार ''सामाजिक क्षमता प्रभावी ढंग से एक व्यक्ति, स्थिति, बातचीत बैठक या सफलतापूर्वक अलग–अलग पर्यावरणीय कारकों से निपटने में एक व्यक्ति की सामाजिक क्षमता और पारस्परिक कौशल है।''

अन्नामलाई, के0 (2015) ने अपने अनुसंधान में बताया कि सामाजिक क्षमता; सामाजिक, भावनात्मक, संज्ञानात्मक और व्यवहार कौशल से मिलकर बनी एक जटिल, बहुआयामी अवधारणा है और साथ ही यह प्रेरक और प्रत्याशा कौशल सफल सामाजिक अनुकूलन के लिए आवश्यक होती है।

''सामाजिक दक्षता'' एक ऐसा गुण है, जिसमें परस्पर सहयोग सहिष्णुता तथा सहानुभूति के भाव सम्मिलित है, ये सब गुण बालक अपने परिवार में रहकर ही सीखता है, अतः यहां बालक के सामाजिक दक्षता के विकास में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके अतिरिक्त सामाजिक दक्षता में सामाजिक चेतना, आर्थिक उत्पादकता एवं सांस्कृतिक तथा नैतिक उन्नयन आदि बातें भी शामिल हैं।

प्रस्तावित शोध के उद्देश्य–

शोध समस्या अपने आप में अध्ययन के उद्देश्य को इंगित करता है। प्रस्तावित शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता की तुलना करना।

2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता की तुलना करना।

3. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व सामाजिक दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

4. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व सामाजिक दक्षता के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

प्रस्तावित शोध परिकल्पना–

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध में परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए निम्नलिखित परिकल्पना का अध्ययन किया जायेगा–

1. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता में भेद है।

2. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के उच्च एवं निम्न पारिवारिक वातावरण वाले विद्यार्थियों की सामाजिक दक्षता में भेद है।

3. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व सामाजिक दक्षता के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

4. राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी संस्थान में अध्ययनरत् माध्यमिक स्तर के ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण व सामाजिक दक्षता के मध्य सार्थक सम्बन्ध है।

प्रस्तावित शोध विधि–

प्रस्तावित शोध अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान विधि के अन्तर्गत सर्वेक्षण प्रविधि का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्रयुक्त चर–

प्रस्तावित अनुसंधान अध्ययन में प्रयुक्त चर निम्नलिखित हैं–

चर

स्वतंत्र चर — आश्रित चर

स्वतंत्र चर: पारिवारिक वातावरण

आश्रित चर: सामाजिक दक्षता

प्रस्तावित शोध अध्ययन हेतु न्यादर्श–

प्रस्तावित शोध अध्ययन में वाराणसी मण्डल, (वाराणसी, जौनपुर, गाजीपुर, चंदौली) के विभिन्न राष्ट्रीय मुक्त विद्यालय शिक्षा संस्थान (NIOS) में माध्यमिक स्तर में अध्ययनरत् समस्त विद्यार्थी प्रस्तुत अध्ययन की जनसंख्या होगी। इस जनसंख्या में से 400 विद्यार्थियों को गुच्छ न्यायदर्श विधि का प्रयोग कर न्यायदर्श हेतु चयन किया जायेगा। जिसमें 200 शहरी एवं 200 ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी होंगे।

प्रस्तावित शोध अध्ययन हेतु उपकरण–

प्रस्तावित शोध अध्ययन के लिए सम्बन्धित तथ्यों के संकलन हेतु निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया जायेगा–

1. पारिवारिक वातावरण परिसूची—डॉ0 करूणा शंकर मिश्र द्वारा निर्मित

2. सामाजिक दक्षता ज्ञात करने हेतु—डॉ वी0पी0 शर्मा, डॉ0 प्रभा शुक्ला एवं डॉ0 किरन शुक्ला द्वारा निर्मित सामाजिक दक्षता मापनी।

प्रस्तावित शोध अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी—

प्रस्तावित शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन, सहसम्बन्ध के अतिरिक्त उपयुक्त प्रदत्त विश्लेषण हेतु 't' जैसी सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

प्रस्तावित शोध का परिसीमांकन—

प्रस्तावित शोध अध्ययन में निम्नलिखित बिन्दुओं के अन्तर्गत अनुसंधान सम्पादित किया जायेगा—

1. प्रस्तावित शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के वाराणसी मण्डल के चार जिलों, जौनपुर, वाराणसी, गाजीपुर व चंदौली तक सीमित है।

2. प्रस्तावित शोध अध्ययन में केवल राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (NIOS) में पंजीकृत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

3. प्रस्तावित शोध अध्ययन में माध्यमिक स्तर के कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

शोध के अपेक्षित परिणाम—

प्रस्तावित शोध की आवश्यकता इसलिए हुई कि दूरस्थ शिक्षा विधि से अध्ययन करने वाले छात्र—छात्राओं के इस भौतिकवादी युग में नैतिक मूल्यों

और कौशलों पर सामाजिक चेतना व पारिवारिक परिवेश का क्या प्रभाव पड़ रहा है? शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास न होकर सम्पूर्ण रूप से मानवीय विकास है, जिसमें पारिवारिक परिवेश की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। अनुसंधान विषय के समग्र मूल्यांकन करने की अतिआवश्यकता वर्तमान सन्दर्भ में समाज के साथ ही राष्ट्रीय विकास के लिए है।

उपरोक्त विषय पर अनुसंधान कार्य करने के पश्चात निश्चित रूप से कुछ महत्वपूर्ण एवं नई जानकारियाँ आलोक में आयेंगी जो भविष्य के लिए लाभ प्रद होंगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. रूहेला, सत्यपाल (2017), भारतीय शिक्षा का समाजशास्त्र, जयपुरः राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी।

2. लाल, रमन बिहारी (2001), शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन मेरठ।

3. गुप्ता, एस0पी0 (2007), आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन, इलाहाबाद, शारदा पुस्तक भवन।

4. पाण्डेय, के0पी0 (2019), नवीन शिक्षा मनोविज्ञान विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी।

5. गुप्ता, एस0पी0 (2020), अनुसंधान संदर्शिका–सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि, इलाहाबाद शारदा पुस्तक भवन।

6. पाण्डेय, रामशकल, शिक्षा की दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि, आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।

7. कोली, लक्ष्मी नारायण (2021), रिसर्च मैथडोलॉजी, आगरा, वाई0के0 पब्लिशर्स।

8. रामाकान्त (2020) उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लोकतांत्रिक मूल्यों का उनके लिंग, परिवेश एवं संवेगात्मक बुद्धि के संदर्भ में तुलनात्मक अध्ययन, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, डॉ0 हरीसिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर, म0प्र0 www.shodhganga.inflibnet.ac.in

9. मिश्रा, अनुराग (2020) उच्च माध्यमिक छात्रों के बीच समायोजन पर व्यक्तिगत मूल्यों, शैक्षिक आकांक्षा, जीवन शैली और निराशा का प्रभाव, शोध प्रबन्ध, शिक्षाशास्त्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय प्रयागराज www.shodhganga.inflibnet.ac.in

10. शर्मा, देवकी नन्दन (2018), पारिवारिक वातावरण एवं शैक्षिक उपलब्धि का सम्बन्ध–एक अध्ययन (शोध पत्र) IJCRT Vol. 6 (2)

11. श्रीवास, संदीप कुमार (2017), पारिवारिक पर्यावरण के संदर्भ में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक रूचि, मानसिक स्वास्थ्य एवं सामाजिक दक्षता का अध्ययन, शोध प्रबन्ध शिक्षाशास्त्र, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ www.shodhganga.inflibnet.ac.in

12. श्रीवास, संदीप कुमार एवं कुमार, अरूण (2016), माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के पारिवारिक पर्यावरण का लिंग एवं क्षेत्र के संदर्भ में अध्ययन (शोध पत्र) SRJIS Vol. 3/15.

अध्यायीकरण

अध्याय	विषय
प्रथम	प्रस्तावना, उद्देश्य एवं सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि • प्रस्तावना • अध्ययन की सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि • अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व • अध्ययन का शीर्षक • अध्ययन के उद्देश्य • अध्ययन की परिकल्पनाएं • अध्ययन की सीमाएं • अध्ययन में प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण
द्वितीय	सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण • विदेशों में हुए अध्ययन • भारत में हुए अध्ययन • सम्बन्धित साहित्य के निष्कर्ष • सम्बन्धित अध्ययन एवं प्रस्तुत अध्ययन
तृतीय	अध्ययन की योजना एवं विधि • अध्ययन विधि • प्रयुक्त चर • जनसंख्या एवं न्यादर्श • प्रयुक्त उपकरण • प्रयुक्त सांख्यिकी

चतुर्थ	समंकों का विश्लेषण एवं व्याख्या • समंकों का संकलन • समंकों का सारणीयन • समंकों का विश्लेषण एवं व्याख्या
पंचम	निष्कर्ष एवं सुझाव • परिकल्पनाओं का परीक्षण • शोध के निष्कर्ष • शोध के शैक्षिक निहितार्थ • भावी अध्ययन हेतु सुझाव • संदर्भ ग्रन्थ सूची
	• परिशिष्ट

DrillBit

The Report is Generated by DrillBit Plagiarism Detection Software

Selected Language	Hindi

Submission Information

Author Name	Akhilesh Kumar
Title	Rastriya Mukt Vidyalayi Sansthan me ...
Paper/Submission ID	4085811
Submitted by	rjmauryauprtou@gmail.com
Submission Date	2025-07-11 16:32:35
Document type	Synopsis

Result Information

Similarity	**9%**

A Unique QR Code use to View/Download/Share Pdf File